

[2023] 3 एस. सी. आर. 618

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 3 एस सी आर।

ए.

मेसर्स बी. आई. एल. ए. जी. इंडस्ट्रीज पी. लिमिटेड और ए. एन. आर.

बनाम

कॉमर। ऑफ सेन। ईएक्ससी। दमन और ए. एन. आर. (दीवानी अपील सं.9195-9196 2010 का) 22 मार्च, 2023

बी.

[एस. रवींद्र भाट और दीपांकर दत्ता, जे. जे.]

केंद्रीय प्रशुल्क अधिनियम, 1985 -एस. 4 (4) (सी)-बी. आई. एल. में एग्रीडवो एस. ए. के पास शुरू में 51 प्रतिशत शेयर पूंजी थी (जिसे बाद में बढ़ाकर 74 प्रतिशत कर दिया गया) और यह 51 प्रतिशत से अधिक बनी रही-इस प्रकार बी. आई. एल. एग्रीडवो एस. ए. की सहायक कंपनी बन गई-एग्रीडवो एस. ए. ने एवेंटिस क्रॉपसाइंस (इंडिया) लिमिटेड में 100% शेयर रखे-इसलिए, बी. आई. एल. और एवेंटिस क्रॉपसाइंस (इंडिया) लिमिटेड दोनों ही एग्रीडवो एस. ए. की सहायक बन गईं (जिसका नाम मार्च 2000 के आसपास एवेंटिस क्रॉप साइंस एस. ए. में बदल दिया गया था)-इस मामले में विवाद एस्बिओथ्रिन के मूल्य के संबंध में उत्पन्न हुआ-बी. आई. एल. अपने निर्मित उत्पादों को विभिन्न कंपनियों को बेच रही थी। 4(4)(ग) केंद्रीय उत्पाद शुल्क अधिनियम, 1944-आयोजित:तत्काल मामले में, निस्संदेह एग्रेवो एस. ए./एवेंटिस क्रॉपसाइंस एस. ए. की एवेंटिस क्रॉपसाइंस (इंडिया) लिमिटेड (खरीदार) में पूरी हिस्सेदारी है-यह बी. आई. एल. में भी एक शेयरधारक है-बाद के सभी उत्पाद एवेंटिस क्रॉपसाइंस (इंडिया) लिमिटेड को बेचे जाते हैं-हालांकि, इससे यह नहीं पता चलता है कि बी. आई. एल. का एवेंटिस क्रॉपसाइंस (इंडिया) लिमिटेड के मामलों में कोई व्यावसायिक हित या रुचि है, न ही इसके विपरीत, कि एवेंटिस क्रॉपसाइंस (इंडिया) लिमिटेड का बी. आई. एल. में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से ऐसा कोई हित है-यह जांचने में राजस्व की चिंता कि क्या पक्ष संबंधित थे, उचित हो सकता है; हालांकि, यह नहीं हो सका।

सी.

डी.

ई.

एफ.

जी.

एच.

618 ए.

619

मेसर्स बिग इंडस्ट्रीज पी. लिमिटेड बनाम कॉमर। ऑफ सेन। ईएक्ससी। दमन ए

उचित परीक्षण को लागू करना-इसके अतिरिक्त, राजस्व के पास दस्तावेजों के रूप में सामग्री थी जो लाभ मार्जिन की ओर संकेत करती थी, और तुलना करने के लिए अन्य वस्तुनिष्ठ साक्ष्य, यदि वास्तव में, बेची गई वस्तुओं की लागत कम थी, या उसी या समान वस्तुओं के बाजार मूल्य से तुलनीय थी-ऐसा कोई निष्कर्ष नहीं है कि माल की कीमत उन वस्तुओं की कीमत से कम थी, बाजार में-इसलिए, विवादित आदेश को बनाए नहीं रखा जा सकता है-अपील की अनुमति है।

बी.

भारत संघ और अन्य बनाम एटिक इंडस्ट्रीज लिमिटेड **[1984] 3 एससीआर 930**; भारत संघ और अन्य बनाम हिंद लैंप लिमिटेड **[1989] 2 एससीआर 1023**; केंद्रीय उत्पाद शुल्क आयुक्त, हैदराबाद बनाम डिटर्जेंट इंडिया लिमिटेड **[2015] 6 एससीआर 886**; केंद्रीय उत्पाद शुल्क आयुक्त, चंडीगढ़ बनाम मेसर्स

सी.

गुणवत्ता आइसक्रीम कं. [2010] 14 एससीआर 409-पर निर्भर था।

केंद्रीय उत्पाद शुल्क आयुक्त, औरंगाबाद बनाम गुडइयर साउथ एशिया टायर्स प्राइवेट लिमिटेड और अन्य। **(2015) 11 एससीसी 646**; सुप्रीम वॉशर्स प्राइवेट लिमिटेड बनाम कमिश्नर

डी.

केन्द्रीय उत्पाद शुल्क, पुणे (2003) 1 एस. सी. सी. 142-निर्दिष्ट।

संदर्भित निर्णय

[1984] 3 एससीआर 930

पर भरोसा किया गया |

पैरा **8**

ई.

[1989] 2 एससीआर 1023

पर भरोसा किया गया |

पैरा 8

[2015] 6 एससीआर 886

पर भरोसा किया गया |

पैरा 8

[2010] 14 एससीआर 409

पर भरोसा किया गया |

पैरा 8

(2015) 11 एस. सी. सी. 646

पर भरोसा किया गया |

पैरा 14

(2003) 1 एस. सी. सी. 142

पर भरोसा किया गया |

पैरा 16

एफ.

सिविल अपीलीय न्यायनिर्णय:2010 की सिविल अपील सं. 9195-9196।

2007 के अपील Nos.E/282 और 281 में सीमा शुल्क, उत्पाद शुल्क और सेवा कर अपीलीय न्यायाधिकरण, पश्चिम क्षेत्रीय पीठ, अहमदाबाद के दिनांक 23.04.2010 के निर्णय और आदेश से।

जी.

वी. श्रीधरन, वरिष्ठ अधिवक्ता, सुश्री चरण्या लक्ष्मी कुमारन, सुश्री अपेक्षा मेहता, सुश्री नेहा चौधरी, सुश्री फाल्गुनी गुप्ता, आर. पार्थसारथी, अधिवक्तागण अपीलार्थियों के लिए।

एन. वेंकटरमन, ए. एस. जी., अरिहित प्रसाद, वरिष्ठ अधिवक्ता, चंद्रशेखर भारती, सुश्री बी. सुनीता राव, सुश्री रुचि गौर नरुला, विवासवन गुआतम, बी. कृष्ण प्रसाद, अधिवक्तागण उत्तरदाताओं के लिए।

एच.

न्यायालय का निर्णय इसके द्वारा दिया गया था

एस. रवींद्र भट्ट, न्याय०

1. सीमा शुल्क, उत्पाद शुल्क और सेवा कर अपीलीय न्यायाधिकरण 1 (इसके बाद 'सी. ई. एस. टी. ए. टी.' या 'न्यायाधिकरण') के आदेश के खिलाफ निर्देशित इन अपीलों में विचार के लिए जो प्रश्न उठता है, वह यह है कि क्या अपीलार्थी मेसर्स बिलाग इंडस्ट्रीज लिमिटेड, वापी (इसके बाद 'बी. आई. एल.') ने जिस कीमत पर खरीदार को अपने उत्पाद बेचे हैं, उसे केंद्रीय उत्पाद शुल्क अधिनियम, 1944 (इसके बाद 'अधिनियम') की धारा 4 (4) (सी) के तहत 'संबंधित व्यक्ति' के साथ लेनदेन के रूप में माना जाना चाहिए।

बी.

2. बी. आई. एल. को 1992 में मित्सु इंडस्ट्रीज लिमिटेड (इसके बाद 'एम. आई. एल.') के रूप में निगमित किया गया था; इसका गठन बिलखिया परिवार के सदस्यों द्वारा किया गया था जो इसके प्रमुख शेयरधारक/प्रवर्तक थे। एम. आई. एल. कीटनाशकों, कीटनाशकों और केंद्रीय प्रशुल्क अधिनियम, 1985 (इसके बाद 'सी. ई. टी. ए.') के अध्याय 38 के तहत वर्गीकृत किए जाने वाले उनके मध्यस्थों का निर्माण करती थी। ये पायरेथ्रॉइड उत्पादों की व्यापक श्रेणी के अंतर्गत आते हैं। साइपरमेथ्रिन और अल्फा सायरमेथ्रिन जैसे अन्य उत्पादों के अलावा, एम. आई. एल. ने उत्पादों की पूरी श्रृंखला के लिए एलेथ्रिन, डेल्टामेथ्रिन और मध्यवर्ती का निर्माण किया। जुलाई 1999 से पहले, एम. आई. एल. ने एस्बिओथ्रिन और एस्बिओल (एलेथ्रिन के उत्पाद समूह के अंतर्गत आने वाले) का निर्माण नहीं किया था।

सी.

डी.

3. 16.02.1998 पर, AgrEvo GmbH और MIL ने एक आशय पत्र पर हस्ताक्षर किए, और 22.11.1998 पर उन्होंने मुख्य रूप से सिंथेटिक पाइरेथ्रॉइड उत्पादों और उनके मध्यवर्ती उत्पादों के अनुसंधान, निर्माण और बिक्री के लिए एक संयुक्त उद्यम बनाने के अपने इरादे को व्यक्त करते हुए एक समझौता पत्र ('एमओयू') पर हस्ताक्षर किए। इसके बाद, एम. आई. एल., एग्रेवो जी. एम. बी. एच. और एग्रेवो एस. ए. ने 03.07.1999 पर एक संयुक्त उद्यम समझौता (जे. वी. ए.) किया। यह कृषि रसायनों और पर्यावरणीय स्वास्थ्य उत्पादों के अनुसंधान, विकास और निर्माण के उद्देश्य से था। एम. आई. एल. ने पहले अपने पूरे गैर-

पायरोथायराइड व्यवसाय को किसी अन्य कंपनी, अर्थात् मित्सु पेस्टिसाइड्स लिमिटेड को हस्तांतरित करने पर सहमति व्यक्त की।

ई.

एफ.

4. जे. वी. ए. के बंद होने की तारीख को, एम. आई. एल. का नाम बदलकर मेसर्स बिलाग इंडस्ट्रीज लिमिटेड ('बी. आई. एल.') कर दिया गया था। संयुक्त उद्यम के गठन के समय बी. आई. एल. में एग्रेवो एस. ए. की 51 प्रतिशत शेयर पूंजी थी और बी. आई. एल. में शेष शेयर पूंजी बिलाखिया परिवार के पास थी। जे. वी. ए. के अलावा, एग्रेवो एस. ए. और एम. आई. एल. द्वारा एक प्रौद्योगिकी और ज्ञान-कैसे लाइसेंस समझौता (दिनांक 13.07.1999) किया गया था। इस लाइसेंस समझौते के संदर्भ में, आवश्यक प्रक्रिया और निर्माण करने की जानकारी

जी.

1 क्रम सं. 330-337 WZD/AHB/20210 A में दिनांकित 23.04.2010

एच.

621

मेसर्स बिग इंडस्ट्रीज पी. लिमिटेड बनाम कॉमर। ऑफ सेन। ईएक्ससी। दमन [एस. रवींद्र भाट, जे.] ए.

एग्रेवो एसए द्वारा प्रदान किए गए विनिर्देशों के अनुसार एस्बिओथ्रिन और एस्बिओल को बीआईएल को स्थानांतरित कर दिया गया था। इस समझौते के संदर्भ में, एग्रेवो एसए ने एग्रेवो एसए के विनिर्देशों के अनुरूप एल्लेथ्रिन अणुओं (यानी, एस्बिओथ्रिन और एस्बिओल उत्पादों) के निर्माण के लिए बीआईएल को लाइसेंस देने पर सहमति व्यक्त की थी। इस प्रकार, एक संयुक्त उद्यम भागीदार के रूप में, एग्रेवो एसए ने बीआईएल में पूंजी के रूप में एक निश्चित राशि का निवेश किया और संयुक्त उद्यम कंपनी (बीआईएल) के लिए एस्बिओथ्रिन और एस्बिओल उत्पादों के निर्माण के लिए तकनीकी जानकारी भी लाई। जे. वी. ए. के संदर्भ में, यह सहमति हुई कि बिलाखिया परिवार के तीन सदस्यों (जो एम. आई. एल. के निदेशक थे) को जे. वी. ए. के अनुरूप पक्षों के रूप में '25.51 करोड़ का गैर-प्रतिस्पर्धी शुल्क दिया जाना था। इस गैर-प्रतिस्पर्धा शुल्क ने बिलाखियों को जे. वी. ए. के लागू होने के बाद, यानी 03.07.1999 से प्रतिस्पर्धा नहीं करने के लिए बाध्य किया।

बी.

सी.

5. बी. आई. एल. अपने निर्मित उत्पादों को रोन पोलेन्क एग्रो केमिकल्स इंडिया लिमिटेड/एवेंटिस क्रॉपसाइंस (इंडिया) लिमिटेड सहित विभिन्न थोक फॉर्मूलेटरों को बेच रहा था। बी. आई. एल. से खरीदी गई एस्बिओथ्रिन को एवेंटिस क्रॉपसाइंस (इंडिया) लिमिटेड द्वारा विभिन्न अंतिम उपभोक्ताओं को बेचा गया था। बी. आई. एल. से खरीदे गए अन्य उत्पादों का उपयोग एवेंटिस क्रॉपसाइंस (इंडिया) लिमिटेड द्वारा सूत्रीकरण के लिए किया गया था। जिस मूल्य पर बी. आई. एल. द्वारा निर्मित और निर्यात पर एग्रेवो एस. ए. को बेचा गया माल दिनांक 03.07.1999 के आपूर्ति समझौते पर आधारित था। आपूर्ति समझौते के अनुसार, बी. आई. एल. ने अप्रैल 1999 से मार्च 2003 तक अलग-अलग अवधि के लिए एक विशेष मूल्य पर डेल्टामेथ्रिन उत्पाद बेचने पर सहमति व्यक्त की। मूल्य का निर्धारण उत्पादन की वास्तविक लागत और लाभ मार्जिन के आधार पर किया जाना था जैसा कि दिनांकित 03.07.1999 के आपूर्ति समझौते के अनुलग्नक 3.1 (ए) में तालिका में उल्लेख किया गया है। इसी तरह, एल्लेथ्रिन उत्पादों (एस्बिओथ्रिन) को बी. आई. एल. द्वारा एग्रेवो एस. ए. को वास्तविक कीमत के साथ-साथ 1999-2000 में 35 प्रतिशत, 2000-2001 में 30 प्रतिशत और 2002-2003 में 25 प्रतिशत पर बेचने पर भी सहमति व्यक्त की गई। एस्बिओथ्रिन उत्पादों को भारत के बाहर एग्रेवो एसए द्वारा बेचा जाता था। बी. आई. एल. ने भारत में एग्रीडो (इंडिया) लिमिटेड/एवेंटिस क्रॉपसाइंस (इंडिया) लिमिटेड को अपनी बिक्री के लिए उसी तरह से कीमत तय की। विदेशी कंपनियों के शेयर होल्डिंग पैटर्न में कुछ बदलाव बाद में हुए; हालाँकि, वे इस मामले को तय करने के उद्देश्यों के लिए प्रासंगिक नहीं हैं।

डी.

ई.

एफ.

6. इस मामले के लिए प्रासंगिक बात यह है कि बी. आई. एल. में एग्रीवो एस. ए. के पास शुरू में 51 प्रतिशत शेयर पूंजी थी (जिसे बाद में बढ़ाकर 74 प्रतिशत कर दिया गया) और यह 51 प्रतिशत से अधिक बनी रही। बी. आई. एल. इस प्रकार एग्रेवो एस. ए. की सहायक कंपनी बन गई। एग्रेवो एसए के पास एवेंटिस क्रॉप साइंस (इंडिया) लिमिटेड में 100% शेयर थे। इसलिए, बी. आई. एल. और एवेंटिस क्रॉप साइंस (इंडिया) लिमिटेड दोनों ही एग्रेवो एस. ए. (जिसका नाम था) की सहायक बन गईं।

जी.

एच.

622

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 3 एस सी आर।

मार्च 2000 के आसपास एवेंटिस क्रॉपसाइंस एसए में बदल दिया गया; दोनों नाम एक दूसरे के स्थान पर उपयोग किए जाते हैं) प्रासंगिक अवधि के दौरान। इस मामले में विवाद एस्बिओथ्रिन के मूल्य के संबंध में उत्पन्न हुआ। 19.04.2000-23.05.2001 के बीच की अवधि के दौरान, बी. आई. एल. ने सामान एवेंटिस क्रॉपसाइंस (इंडिया) लिमिटेड को बेच दिया, जिसने इसे अंतिम ग्राहकों को बेच दिया। इस अवधि के लिए, एवेंटिस क्रॉप साइंस (इंडिया) लिमिटेड द्वारा अंतिम ग्राहकों को उत्पाद को बेचने की कीमत को लेन-देन लागत को नजरअंदाज करते हुए आकलन योग्य मूल्य के रूप में मानने का प्रस्ताव है। उस अवधि के लिए शुल्क की मांग '1,68,81,685/- थी।' 2,39,54,913/- की राशि की मांग इस आधार पर की गई थी कि एग्रीडो एसए/एवेंटिस क्रॉपसाइंस एसए ने अपनी 100% स्वामित्व वाली सहायक कंपनी एवेंटिस क्रॉपसाइंस (इंडिया) लिमिटेड के माध्यम से विज्ञापन, प्रचार, विपणन और बिक्री खर्च, भंडारण, बाहरी हैंडलिंग, सर्विसिंग, वारंटी आदि के लिए किए गए खर्चों के लिए '14,97,18,205/- की राशि बरामद की थी, सुमितोमो के साथ इस आधार पर किए गए समझौते के संदर्भ में कि चूंकि एग्रीडो एसए/एवेंटिस क्रॉपसाइंस एसए बीआईएल की होल्डिंग कंपनी थी, सुमितोमो द्वारा एग्रीडो एसए/एवेंटिस क्रॉपसाइंस एसए को भुगतान की गई राशि होनी चाहिए। 09.06.2001 से 25.03.2004 की अवधि के दौरान एस्बिओथ्रिन पर अंतर शुल्क के रूप में '5,95,97,434/- की राशि की मांग की गई थी, इस आधार पर कि सुमितोमो द्वारा अंतिम ग्राहकों को जिस मूल्य पर माल बेचा गया था, वह आकलन योग्य मूल्य के निर्धारण का आधार होना चाहिए और बी. आई. एल. द्वारा एवेंटिस क्रॉपसाइंस (इंडिया) लिमिटेड को की गई बिक्री किसी "संबंधित" व्यक्ति को थी। मूल आदेश के खिलाफ बी. आई. एल. ने सी. ई. एस. टी. ए. टी. में अपील की थी।

बी.

सी.

डी.

ई.

7. विवादित आदेश द्वारा, सी. ई. एस. टी. ए. टी. ने नोट किया कि बी. आई. एल. ने एस्बिओथ्रिन के निर्माण की एक प्रक्रिया विकसित की थी जो अंतिम चरण तक नहीं पहुंची थी। इससे पहले, एग्रेवो एसए, विदेशी कंपनी को पता चला कि एक प्रतियोगी उभर रहा है, और यह एक जे. वी. ए. में प्रवेश किया। परिणाम यह हुआ कि बी. आई. एल. ने प्रक्रिया के विकास को रोक दिया। इसने पूरी विनिर्माण प्रक्रिया के साथ-साथ उत्पाद के निर्माण का अधिकार प्राप्त किया और फिर, पूरे उत्पाद को एग्रेवो एसए की सहायक कंपनी को बेच दिया। बदले में, बी. आई. एल. को बिना किसी लागत के तकनीकी जानकारी के साथ-साथ एग्रीडो एस. ए. की एक सहायक कंपनी द्वारा विकसित एक मौजूदा विपणन व्यवस्था भी प्राप्त हुई। बी. आई. एल. को उत्पाद की बिक्री और उसके द्वारा की गई विनिर्माण गतिविधियों के लिए लाभ के स्तर का भी

आश्वासन दिया गया था। यह अन्य उत्पादों को विकसित करने के लिए स्वतंत्र था। निजी कंपनी के शेयरधारकों, बिलाखिया के परिवार के सदस्यों को भी एकमुश्त गैर-प्रतिस्पर्धा शुल्क मिला। बदले में, एग्रेवो एसए और भारतीय सहायक ने ए सुनिश्चित किया

एफ.

जी.

एच.

623

मेसर्स बिग इंडस्ट्रीज पी. लिमिटेड बनाम कॉमर। ऑफ सेन। ईएक्ससी। दमन [एस. रवींद्र भाट, जे.] ए.

कि कोई प्रतियोगी नहीं थे। उनके द्वारा स्थापित बाजार अक्षुण्ण था। इसके अलावा, जिस उत्पाद मूल्य पर वे बेचे गए, उसमें किसी संशोधन की आवश्यकता नहीं थी। किसी भी प्रतियोगी की अनुपस्थिति में विपणन व्यवस्था और उनके द्वारा पहचाने गए उपभोक्ता बरकरार रहेंगे। सी. ई. एस. टी. ए. टी. के अनुसार, विदेशी कंपनी (एग्रेवो एस. ए., जिसे बाद में एवेंटिस क्रॉपसाइंस एस. ए. के नाम से जाना गया) और दो भारतीय सहायक कंपनियों के बीच ये लेनदेन एक संयुक्त संचालन था जिससे दोनों को लाभ हुआ। इसलिए, जिस कीमत पर बी. आई. एल. ने एवेंटिस क्रॉप साइंस (इंडिया) लिमिटेड को माल बेचा, उसे "संबंधित व्यक्ति" को बिक्री के रूप में माना जाना था।

बी.

8. बी. आई. एल. की ओर से पेश वरिष्ठ अधिवक्ता श्री वी. श्रीधरन ने विद्वान कि विवादित आदेश गलत है। उन्होंने प्रस्तुत किया कि इस न्यायालय द्वारा यह तय करने के लिए लगातार परीक्षण लागू किया गया है कि क्या कोई इकाई दूसरे से "संबंधित" थी, यह है कि क्या विक्रेता की खरीदार के व्यवसाय और मामलों में रुचि है; और इसी तरह, क्या खरीदार की विक्रेता के व्यवसाय में रुचि है। भले ही एक उपस्थित हो, दूसरे की अनुपस्थिति में, धारा 4 (4) (सी) के उद्देश्य के लिए कोई संबंध नहीं होगा और लेनदेन को हाथ की लंबाई में एक माना जाना चाहिए। विद्वान अधिवक्ता ने इस न्यायालय के फैसलों पर भरोसा किया, जैसा कि रिपोर्ट किया गया था

सी.

डी.

भारत संघ और अन्य बनाम एटिक इंडस्ट्रीज लिमिटेड 2, भारत संघ और अन्य बनाम हिंद लैंप लिमिटेड 3, केंद्रीय उत्पाद शुल्क आयुक्त, हैदराबाद बनाम डिटर्जेंट इंडिया लिमिटेड 4, और

केंद्रीय उत्पाद शुल्क आयुक्त, चंडीगढ़ बनाम मेसर्स क्वालिटी आइसक्रीम कंपनी 5। यह तर्क दिया गया था कि

ई.

जे. वी. ए. के निर्माण द्वारा प्राप्त उत्पादन में तालमेल ने जे. वी. भागीदारों के विकास और संसाधनों को अनुकूलित किया; बी. आई. एल. (निर्धारिती) द्वारा एग्रेवो एस. ए./एवेंटिस क्रॉप साइंस एस. ए. की एक अन्य सहायक कंपनी एवेंटिस क्रॉप साइंस (इंडिया) लिमिटेड (खरीदार) को बिक्री के परिणामस्वरूप बी. आई. एल. को अपने व्यवसाय या मामलों में रुचि नहीं मानी गई; इसी तरह, एवेंटिस क्रॉप साइंस (इंडिया) लिमिटेड की बी. आई. एल. के व्यवसाय में कोई रुचि नहीं थी।

एफ.

9. राजस्व की ओर से पेश वरिष्ठ वकील श्री अरिजीत प्रसाद ने विद्वान कि व्यावसायिक संबंधों और दूसरे के मामलों या व्यवसाय में एक संस्था के हित को एक संकीर्ण स्थिति में नहीं रखा जा सकता है। जे. वी. ए. और बी. आई. एल. का गठन, जिसमें विदेशी कंपनी एग्रेवो एस. ए./एवेंटिस क्रॉपसाइंस एस. ए. एक प्रमुख शेयरधारक है, यह सुनिश्चित करने के उद्देश्य से किया गया था कि निर्मित उत्पाद अपने विदेशी बाजारों तक पहुंचें।

जी.

2 [1984] 3 एससीआर 930 3 [1989] 2 एससीआर 1023 4 [2015] 6 एससीआर 886 5 [2010] 14 एससीआर 409

एच.

624

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 3 एस सी आर।

अपनी सहायक कंपनी एवेंटिस क्रॉपसाइंस (इंडिया) लिमिटेड के माध्यम से, जिसका स्वामित्व एग्रीईवो एसए/एवेंटी क्रॉपसाइंस एसए के पास था। ये स्पष्ट रूप से खरीदार के व्यवसायों में एक दूसरे में वास्तविक और जीवंत रुचि को दर्शाते हैं। इसलिए उन्होंने कहा कि सी. ई. एस. टी. ए. टी. के आदेश में हस्तक्षेप नहीं किया जाना चाहिए।

विश्लेषण और तर्क

बी.

10. अधिनियम की धारा 4 का प्रासंगिक भाग इस प्रकार है:

“4. प्रभारित करने के उद्देश्यों के लिए उत्पाद शुल्क योग्य वस्तुओं का मूल्यांकन

उत्पाद शुल्क-(1) जहां इस अधिनियम के तहत किसी भी उत्पाद शुल्क के मूल्य के संदर्भ में उत्पाद शुल्क लगाया जाता है, तो माल के प्रत्येक हटाने पर ऐसा मूल्य होगा-(ए) ऐसे मामले में जहां निर्धारिती द्वारा माल बेचा जाता है, हटाने के समय और स्थान पर डिलीवरी के लिए, निर्धारिती और माल का खरीदार संबंधित नहीं हैं और कीमत बिक्री के लिए एकमात्र प्रतिफल है, लेनदेन मूल्य होगा; (बी) किसी अन्य मामले में, जिसमें वह मामला भी शामिल है जहां माल नहीं बेचा जाता है, उस तरीके से निर्धारित मूल्य होगा जो निर्धारित किया जाए।

सी.

डी.

स्पष्टीकरण - संदेहों को दूर करने के लिए, यह घोषित किया जाता है कि निर्धारिती द्वारा बेचे गए उत्पाद शुल्क का मूल्य-सह-शुल्क, बेचे गए माल के लिए उसे वास्तव में भुगतान की गई कीमत और ऐसी वस्तुओं की बिक्री के संबंध में खरीदार से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से निर्धारिती को प्रवाहित होने वाले अतिरिक्त प्रतिफल का धन मूल्य, यदि कोई हो, होगा और बिक्री कर और अन्य करों को छोड़कर, यदि कोई हो, तो वास्तव में भुगतान किए गए मूल्य-सह-शुल्क में ऐसी वस्तुओं पर देय शुल्क शामिल माना जाएगा।

ई.

एफ.

(2) जहां किसी उत्पाद शुल्क योग्य वस्तु के संबंध में हटाने के स्थान पर डिलीवरी के लिए उसकी कीमत ज्ञात नहीं है और उसका मूल्य हटाने के स्थान के अलावा किसी अन्य स्थान पर डिलीवरी के लिए कीमत के संदर्भ में निर्धारित किया जाता है, वहां हटाने के स्थान से डिलीवरी के स्थान तक परिवहन की लागत को ऐसी कीमत से बाहर रखा जाएगा।

जी.

(3) इस धारा के प्रावधान किसी भी उत्पाद शुल्क के संबंध में लागू नहीं होंगे, जिसके लिए धारा 3 की उप-धारा (2) के तहत शुल्क मूल्य निर्धारित किया गया है।

एच.

625

मेसर्स बिग इंडस्ट्रीज पी. लिमिटेड बनाम सीएमआर। ऑफ सेन। ईएक्ससी। दमन [एस. रवींद्र भाट, जे.] ए.

ए.

(4) इस धारा के प्रयोजनों के लिए -

(क) "निर्धारिती" से वह व्यक्ति अभिप्रेत है जो इस अधिनियम के तहत उत्पाद शुल्क का भुगतान करने के लिए उत्तरदायी है और इसमें उसका एजेंट भी शामिल है;

(ग) "संबंधित व्यक्ति" से ऐसा व्यक्ति अभिप्रेत है जो निर्धारिती के साथ इस प्रकार जुड़ा हुआ है कि प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से एक दूसरे के व्यवसाय में उनकी रुचि है और इसमें एक धारक कंपनी, एक सहायक कंपनी, निर्धारिती का एक रिश्तेदार और वितरक और निर्धारिती का कोई उप-वितरक और ऐसे वितरक का कोई उप-वितरक शामिल है।"

बी.

सी.

11. एटिक इंडस्ट्रीज (ऊपर) में, इस न्यायालय ने "संबंधित व्यक्ति" अभिव्यक्ति की जांच की:

"परिभाषा के पहले भाग में जो आवश्यक है वह यह है कि जिस व्यक्ति को एक संबंधित व्यक्ति के रूप में ब्रांडेड करने की मांग की जाती है, वह ऐसा व्यक्ति होना चाहिए जो निर्धारिती के साथ इतना जुड़ा हुआ है कि उनकी प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से एक दूसरे के व्यवसाय में रुचि है। यह पर्याप्त नहीं है कि निर्धारिती का उस व्यक्ति के व्यवसाय में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से हित है जो कथित रूप से संबंधित व्यक्ति है और न ही यह पर्याप्त है कि संबंधित व्यक्ति होने का आरोप लगाने वाले व्यक्ति का निर्धारिती के व्यवसाय में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से हित है। परिभाषा के पहले भाग की प्रयोज्यता को आकर्षित करना आवश्यक है कि निर्धारिती और संबंधित व्यक्ति होने का आरोप लगाने वाले व्यक्ति का एक दूसरे के व्यवसाय में प्रत्यक्ष, अप्रत्यक्ष रूप से हित होना चाहिए। उनमें से प्रत्येक का दूसरे के व्यवसाय में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष हित होना चाहिए। एक-दूसरे के व्यवसाय में समानता और ब्याज की मात्रा अलग-अलग हो सकती है; दूसरे के व्यवसाय में एक का हित प्रत्यक्ष हो सकता है, जबकि दूसरे का हित अप्रत्यक्ष हो सकता है। इससे कोई फर्क नहीं पड़ेगा, जब तक कि प्रत्येक को दूसरे के व्यवसाय में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से कुछ रुचि मिलती है। अब, वर्तमान मामले में, अतुल प्रोडक्ट्स लिमिटेड की निर्धारिती के व्यवसाय में निस्संदेह रुचि है, क्योंकि अतुल प्रोडक्ट्स लिमिटेड के पास निर्धारिती की शेयर पूंजी का 50 प्रतिशत हिस्सा है और निर्धारिती द्वारा किए गए व्यवसाय में शेयरधारक के रूप में उसका हित है। लेकिन यह कहना संभव नहीं है कि निर्धारिती की अतुल प्रोडक्ट्स लिमिटेड के व्यवसाय में कोई रुचि है। वहाँ।

डी.

ई.

एफ.

जी.

एच.

626 सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट [2023] 3 एस. सी. आर.

दो दृष्टिकोण हैं जिनसे निर्धारिती और अतुल प्रोडक्ट्स लिमिटेड के बीच संबंधों पर विचार किया जा सकता है। सबसे पहले, यह ध्यान दिया जा सकता है कि अतुल प्रोडक्ट्स लिमिटेड शेयर पूंजी के 50 प्रतिशत की सीमा तक निर्धारिती का एक शेयरधारक है। लेकिन हम यह देखने में विफल हैं कि यह कैसे कहा जा सकता है कि एक सीमित कंपनी का अपने किसी एक शेयरधारक द्वारा किए गए व्यवसाय में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से कोई हित है, भले ही ऐसे शेयरधारक की हिस्सेदारी 50 प्रतिशत हो। दूसरा, अतुल प्रोडक्ट्स लिमिटेड निर्धारिती द्वारा निर्मित रंगों का थोक खरीदार है, लेकिन फिर भी, चूंकि उनके बीच लेनदेन मूलधन से लेकर मूलधन तक होते हैं, इसलिए यह समझना मुश्किल है कि उस परिस्थिति के आधार पर निर्धारिती को अतुल प्रोडक्ट्स लिमिटेड के व्यवसाय में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से कोई रुचि कैसे हो सकती है। 'अतुल प्रोडक्ट्स लिमिटेड निर्धारिती से थोक में मूलधन के आधार पर रंग खरीदता है और फिर बाजार में ऐसे रंग बेचता है। निर्धारिती इस बात से चिंतित नहीं है कि अतुल प्रोडक्ट्स लिमिटेड निर्धारिती से खरीदे गए रंगों को बेचता है या नहीं और न ही यह चिंतित है कि अतुल प्रोडक्ट्स लिमिटेड ऐसे रंगों को नुकसान में बेचता है या नहीं। यह तर्क देना असंभव है कि निर्धारिती का थोक विक्रेता के व्यवसाय में कोई प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष हित है जो मूलधन से मूलधन के आधार पर उससे रंग खरीदता है। क्रिसेंट डायस एंड केमिकल्स लिमिटेड के संबंध में भी यही स्थिति प्राप्त होती है। शायद क्रिसेंट डायस एंड केमिकल्स लिमिटेड के संबंध में स्थिति अतुल प्रोडक्ट्स लिमिटेड की तुलना में बहुत अधिक मजबूत है। क्रिसेंट डायस एंड केमिकल्स लिमिटेड निर्धारिती का शेयरधारक भी नहीं है और इसलिए उसका निर्धारिती के व्यवसाय में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से कोई हित नहीं है।"

बी.

सी.

डी.

ई.

एफ.

12. बाद के निर्णय में हिंद लैम्प लिमिटेड (ऊपर), वही सिद्धांत प्रतिध्वनित किया गया था:

“यह पर्याप्त नहीं है कि निर्धारिती का किसी संबंधित व्यक्ति के व्यवसाय में कोई हित या अप्रत्यक्ष रूप से है और न ही यह पर्याप्त है कि संबंधित व्यक्ति होने का आरोप लगाने वाले व्यक्ति का निर्धारिती के व्यवसाय में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से हित है। परिभाषा के पहले भाग की

प्रयोज्यता को आकर्षित करने के लिए, निर्धारिती और संबंधित व्यक्ति होने का आरोप लगाने वाले व्यक्ति का प्रत्येक ए के व्यवसाय में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से हित होना चाहिए।

जी.

एच.

627

मेसर्स बिग इंडस्ट्रीज पी. लिमिटेड बनाम कॉमर। ऑफ सेन। ईएक्ससी। दमन [एस. रवींद्र भाट, जे.] ए.

अन्य।उनमें से प्रत्येक का दूसरे के व्यवसाय में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष हित होना चाहिए।प्रत्येक के दूसरे के व्यवसाय में जो गुणवत्ता और ब्याज होना चाहिए, वह अलग-अलग हो सकता है; दूसरे के व्यवसाय में एक का हित प्रत्यक्ष हो सकता है जबकि दूसरे का हित अप्रत्यक्ष हो सकता है। तथ्यों का विश्लेषण करने के बाद, यह न्यायालय इस निष्कर्ष पर पहुंचा कि कोई संबंध नहीं था।”

बी.

13. डिटर्जेंट इंडिया लिमिटेड (ऊपर) में, इस न्यायालय ने धारा 4 (4) (सी) में परिभाषा के दोनों हिस्सों की जांच की और निम्नानुसार टिप्पणी की:

“धारा 4 (4) (सी) दो भागों में है।पहले भाग में विभाग को एक वास्तविक परीक्षण लागू करने की आवश्यकता होती है, जबकि दूसरे भाग में एक न्यायिक परीक्षण लागू करने की आवश्यकता होती है।“कंपनी अधिनियम, 1956 में “सापेक्ष” को निम्नानुसार परिभाषित किया गया है:

सी.

***** “रिश्तेदार” की परिभाषा को पढ़ने से पता चलता है कि रिश्तेदार को ऐसा व्यक्ति होने की आवश्यकता नहीं है जो निर्धारिती के साथ इतना जुड़ा हो कि उनका एक-दूसरे के व्यवसायों में आपसी हित हो।यदि ऐसा था, तो दूसरे भाग में “सापेक्ष” अभिव्यक्ति विषम होगी क्योंकि एक रिश्तेदार को पहले भाग में “व्यक्ति” के भीतर शामिल किया जाएगा।इस प्रकार, “रिश्तेदार” भी “व्यक्ति” होंगे जो निर्धारिती के साथ इतने जुड़े हुए हैं कि उनका एक-दूसरे के व्यवसायों में आपसी हित है।विधायिका ने एक न्यायिक परीक्षण के आवेदन द्वारा संबंधित व्यक्तियों के रूप में अधिक के बिना रिश्तेदारों की पूरी सूची को शामिल करने के लिए “संबंधित व्यक्तियों” के अर्थ का विस्तार किया है।इसी तरह, एक सहायक कंपनी पर एक होल्डिंग कंपनी द्वारा नियंत्रण के प्रयोग के आधार पर होल्डिंग कंपनियों और सहायक कंपनियों को इसी तरह एक न्यायिक परीक्षण के आवेदन द्वारा शामिल किया जाता है।

डी.

ई.

एफ.

हमने संकेत दिया है कि निर्धारिती ने तर्क दिया कि शॉ वालेस एंड कंपनी द्वारा उसी/समान उत्पादों के लिए भुगतान की गई कीमत जो असंबंधित संस्थाओं द्वारा उसे बेची गई थी, शॉ वालेस द्वारा डिटर्जेंट इंडिया लिमिटेड को भुगतान की गई कीमत से भी कम थी। यह मामला होने के कारण, यह स्पष्ट है कि यहाँ तथ्यों पर शॉ वालेस और डिटर्जेंट इंडिया लिमिटेड के बीच एक कीमत को कम करने के लिए कोई "व्यवस्था" नहीं है जो अन्यथा हाथ की लंबाई पर है। यद्यपि यह तथ्य आयुक्त के समक्ष स्पष्ट रूप से प्रस्तुत किया गया है।

जी.

एच.

628 सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट [2023] 3 एस. सी. आर.

जैसा कि ऊपर बताया गया है, आयुक्त के आदेश में इस तथ्य के आधार पर कोई निष्कर्ष नहीं है।”

14. केंद्रीय उत्पाद शुल्क आयुक्त, औरंगाबाद बनाम गुडइयर साउथ एशिया टायर्स प्राइवेट लिमिटेड और अन्य में निर्णय। 6 है।

निर्देशात्मक। निर्धारिती, गुडइयर और सी. ई. ए. टी. की एक संयुक्त उद्यम इकाई (जिनमें दोनों का समान हिस्सा था) ने गुडइयर और सी. ई. ए. टी. दोनों से पर्याप्त राशि उधार ली थी। बाद में सी. ई. ए. टी. ने अपनी पूरी हिस्सेदारी गुडइयर को हस्तांतरित कर दी। राजस्व ने आरोप लगाया कि निर्धारिती और गुडइयर संबंधित व्यक्ति थे, जिसे इस अदालत ने नकार दिया था:

बी.

“7. 'एक-दूसरे के व्यवसाय में' अभिव्यक्ति स्पष्ट रूप से दर्शाती है कि दोनों व्यक्तियों के हित पारस्परिक होने चाहिए, यानी एक-दूसरे में, ताकि उन्हें संबंधित व्यक्तियों के रूप में माना जा सके। 8. हम सदस्य न्यायिक के आदेश से पाते हैं कि केवल इस आधार पर कि दोनों कंपनियों ने रु। 85.66 करोड़, निर्धारिती कंपनी को, निर्धारिती और खरीदारों के बीच संबंध स्थापित करने के लिए पर्याप्त माना गया था। यह केवल एक तरफा यातायात को दर्शाता है जबकि आवश्यकता दो तरफा यातायात की है। हमारी राय में, दूसरे सदस्य ने उचित रूप से माना कि यह वह कारक नहीं हो सकता जो हितों की पारस्परिकता को दर्शाए।

सी.

डी.

15. गुणवत्ता आइसक्रीम (ऊपर) में फिर से, न्यायालय ने दो संस्थाओं, अर्थात् निर्धारिती और खरीदार के व्यावसायिक हितों की परस्पर निर्भरता और पारस्परिकता को रेखांकित किया:

ई.

“ऊपर उल्लिखित निर्णयों के विश्लेषण पर, यह प्रतीत होता है कि जो महत्वपूर्ण है वह यह है कि इसमें शामिल प्रत्येक पक्ष का एक-दूसरे के व्यवसाय में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से हित होना चाहिए। मैसर्स क्वालिटी आइसक्रीम और बी. बी. एल. आई. एल./एच. एल. एल. के बीच समझौते के प्रासंगिक खंड निम्नलिखित हैं, जिनके आधार पर और ऊपर उल्लिखित सिद्धांतों को लागू करते हुए, यह विचार लिया जाना आवश्यक है कि क्या वे 'संबंधित व्यक्ति' हैं।

एफ.

जी.

महत्वपूर्ण बात यह है कि वितरक या वितरक के संबंधों से परे कुछ परस्पर निर्भरता और पारस्परिकता है।

6 (2015) 11 एससीसी 646 ए

एच.

629

मैसर्स बिग इंडस्ट्रीज पी. लिमिटेड बनाम कॉमर। ऑफ सेन। ईएक्ससी। दमन [एस. रवींद्र भाट, जे.] ए.

निर्माता ताकि इस बात पर विचार किया जा सके कि क्या पक्ष 'संबंधित व्यक्ति' हैं। तथ्यों पर यह देखा गया है कि अनिवार्य रूप से मैसर्स क्वालिटी आइसक्रीम और बीबीएलआईएल/एचएलएल के बीच संबंध एकतरफा है और तथ्यों से यह नहीं पता चलता है कि उनमें से प्रत्येक का एक-दूसरे के व्यवसाय में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से हित है।”

बी.

16. दूसरी ओर, यदि कोई इस बात पर विचार करता है कि अंतर-संबंध क्या है, तो सुप्रीम वॉशर्स प्राइवेट लिमिटेड बनाम सुप्रीम वॉशर्स प्राइवेट लिमिटेड में निर्णय।

केंद्रीय उत्पाद शुल्क आयुक्त, पुणे 7, निर्देशात्मक हैं। निर्धारिती

और खरीदार कच्चे माल की आम खरीद में शामिल थे; उनके पास समान स्टॉक लेखांकन और योजना और विनिर्माण कार्यों में परस्पर निर्भरता थी। इस न्यायालय ने माना कि कच्चे माल और अर्ध-तैयार वस्तुओं का सामान्य भंडार रखने, तीनों इकाइयों के बीच मशीनरी के सामान्य उपयोग के साथ, साझा विपणन व्यवस्था और तीनों इकाइयों के बीच वित्त के मुक्त प्रवाह के साथ, कुल मिलाकर निर्धारिती के अंतर संबंधों और एक दूसरे के साथ तीनों इकाइयों की परस्पर निर्भरता को स्थापित करता है।

सी.

डी.

17. वर्तमान मामले में, निस्संदेह एग्रीडो एसए/एवेंटिस क्रॉपसाइंस एसए की एवेंटिस क्रॉपसाइंस (इंडिया) लिमिटेड (खरीदार) में पूरी हिस्सेदारी है। यह बी. आई. एल. में भी एक शेयरधारक है। बाद के सभी उत्पाद एवेंटिस क्रॉपसाइंस (इंडिया) लिमिटेड को बेचे जाते हैं। हालाँकि, यह नहीं दर्शाता है कि बी. आई. एल. का एवेंटिस क्रॉपसाइंस (इंडिया) लिमिटेड के मामलों में कोई व्यावसायिक हित या रुचि है, और न ही, इसके विपरीत, एवेंटिस क्रॉपसाइंस (इंडिया) लिमिटेड का बी. आई. एल. में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से ऐसा कोई हित है। यह जांचने में कि क्या पक्ष संबंधित थे, राजस्व की चिंता उचित हो सकती है; हालाँकि, यह निष्कर्ष नहीं निकाल सकता था कि उचित परीक्षण को लागू किए बिना, धारा 4 (4) (सी) द्वारा विचार किए गए ऐसे संबंध का अनुमान लगाया जा सकता था। इसके अतिरिक्त, राजस्व के समक्ष दस्तावेजों के रूप में सामग्री थी जो लाभ मार्जिन की ओर संकेत करती थी, और तुलना करने के लिए अन्य वस्तुनिष्ठ साक्ष्य, यदि वास्तव में, बेची गई वस्तुओं की लागत कम थी, या उसी या समान वस्तुओं के बाजार मूल्य के साथ तुलनीय थी। ऐसा कोई निष्कर्ष नहीं मिला है कि बाजार में वस्तुओं की कीमत उन वस्तुओं की कीमत से कम थी।

ई.

एफ.

जी.

18. पूर्वगामी चर्चा को ध्यान में रखते हुए, यह निष्कर्ष निकालना होगा कि उस मूल्य को अस्वीकार करने में राजस्व का निर्णय जिस पर माल था।

7 (2003) 1 एस. सी. सी. 142

एच.

630

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 3 एस सी आर।

निर्धारिती के साथ एक संबंधित व्यक्ति के रूप में व्यवहार करना गलत था।इन्हीं कारणों से, यह माना जाता है कि विवादित आदेश को कायम नहीं रखा जा सकता है; इसे अपास्त करना दिया जाता है।अपील की अनुमति है, लेकिन परिस्थितियों में, लागत पर किसी भी आदेश के बिना।

बी.

अंकित ज्ञान

अपीलों की अनुमति दी गई।

(सहायक: महेन्द्र यादव, एलसीआरए)

सी.

डी.

ई.

एफ.

जी.

एच.